नयी ऊर्जा, नया आनंद

क्रांतिबीज की एक कहानी में ओशो कहते हैं कि जो स्वयं नहीं जाना गया है, वह ज्ञान नहीं है। सत्य के, अज्ञात सत्य के संबंध में जो बौद्धिक जानकारी है, वह ज्ञान का आभास है। वह मिथ्या है और सम्यक ज्ञान के मार्ग में बाधा है—05 के दैनिक जागरण में इस कहानी को विस्तार से पढ़ा जा सकता है। 05 को ही महामेधा ने 'राम स्वयं सच्चिदानंद स्वरूप' को प्रकाशित किया है। वहीं 07 को दि टाइम्स ऑफ इंडिया में ओशो की एक ध्यान विधि प्रकाशित हुई, जिसमें ओशो मस्तिष्क में अल्फा किरणों को उत्पन्न करने वाली विधि का खुलासा करते हैं। लिखा है 'जब मस्तिष्क की किरणें शांत हो जाती हैं तब उन्हें अल्फा किरणें कहते हैं, जिसके द्वारा ध्यान की एक अवस्था का निर्माण होता है।' 12 को लुधियाना के दैनिक जागरण में 'आत्मा को नया शरीर देने की आवश्यकता' और दैनिक हिन्दी मिलाप में 'चित्त का समग्र परिवर्तन है संन्यास' पढ़े जा सकते हैं। 'ट्रांसफॉर्मिंग मिज़री इंटू मेडिटेशन'—12 सितंबर के दि आफ्टरनून डिस्पैच में लिखा है कि 'हां, तुम स्वयं से कह सकते हो कि मैं पूरी दुनिया की समस्याओं को स्वयं पर लूंगा। पर तुम दुनिया की समस्याओं के संबंध में जानते क्या हो? तुम्हें खुद की समस्याओं का कुछ पता नहीं! तो खुद की समस्याओं के प्रति पहले साक्षी बनो, उन्हें ध्यान में परिवर्तित करो। और तब एक दिन तुम्हारे हाथ जो चाबी लगेगी जिसे तुम अस्तित्व के साथ, संसार के साथ बांट सकोगे, और तब संसार की समस्याओं को स्वयं पर ले सकोगे।' वासना, दबाओ मत जाना—13 के राष्ट्रीय सहारा में छपे प्रवचन में ओशो कहते हैं कि 'जो वासनाएं दबाई गयी थीं, वे उभरकर आती हैं। उन्हें दबाने की बजाय साक्षी भाव से देखो। क्योंकि उन्हें जान लेने के अतिरिक्त और कोई रूपांतरण नहीं है।'

ઓશો રજનીશમાં આજે પણ લોકોને કેમ આટલી બધી આસ્થા છે?

મહેસાણાના રજનીશ આશ્રમનો મહા આનંદોત્સવ પ્રસંગે સમજાય છે ગુરુનું ખરું મહત્ત્વ અને લોકો હજુય કેમ પૂજે છે ઓમને...

'पीपल आर जैलेस ऑफ ए हैप्पी पर्सन'—16 को दि एशियन एज में लिखा है कि 'जब तुम आनंदित रहोगे तो तुम्हारे मित्र और आसपास के लोगों की ईर्ष्या होगी क्योंकि तुम्हारा आनंद दूसरों के अहंकार को चोट करता है। वे सोचते हैं कि हम तो अभी भी संसार के दुखों से घिरे हुए हैं और तुम कैसे आनंद में मग्न हो सकते हो।' धर्म से संबंधित होना जीवन का सबसे महंगा सौदा है और जिन लोगों ने समझा हो कि यह खून से और जन्म से तय हो जाता है, उन पागलों के लिए क्या कहा जाये?—16 तारीख के दिव्य हिमाचल ने इस प्रवचन को 'धर्म बपौती नहीं है' शीर्षक से प्रकाशित किया।

'अवेयरनेस : दि गोल्डन की'—22 सितंबर के दि टाइम्स ऑफ इंडिया में स्वामी चैतन्य कीर्ति की प्रस्तुति प्रकाशित हुई। लिखा है कि जब कभी भी आपको क्रोध आए, साक्षी भाव से उसे देखो और तत्क्षण तुम महसूस करोगे क्रोध समाप्त हो रहा है, वह परिवर्तित हो रहा है। तुम पाओगे कि वह तुम्हारी ऊर्जा बन गया है। पल भर पहले जो क्रोध था वह अब दया बन गया है, करुणा बन गया है, प्रेम बन गया है। 23 के दिव्य हिमाचल में 'ध्यान और समाधि की झलक' शीर्षक से छपे प्रवचन में ओशो बुद्ध की कहानी के माध्यम से अनाश्रव और आश्रव की स्थिति को समझा रहे हैं। अनाश्रव का अर्थ है चैतन्य की ऐसी दशा, जहां बाहर से कुछ भीतर नहीं आता। आश्रव का अर्थ होता है आना। अनाश्रव वही है कि तुमने द्वार खोला, धूल उड़ी, भीतर न उड़ी, हवा भी न कंपी, कुछ भी भीतर न आया—यह अनाश्रव है।

हमारी आंखें हमारा आईना होती हैं। इन्हीं से संसार दिखता है। रोज़मर्रा की जिंदगी में इसकी अहम भूमिका सभी स्वीकारते हैं, मगर कम ही लोग इसकी भूमिका के लिए इसे धन्यवाद देते हैं। 30 सितंबर के सहारा टाइम्स में ओशो की एक विधि को विस्तार से प्रकाशित किया हे, जिसमें वे बताते हैं कि आप चाहे घर में हों, ऑफिस में हों, आंखों को किस प्रकार आराम दिया जा

Awareness: The Golden Key

Life is simple. Life is complex. We constantly experience these contradictory aspects of life. How do we make sense of it?

सकता है। आंखों को हल्का स्पर्श कर, उन्हें घुमाकर, प्रकाश वर्तुल को देखकर–इन तीन विधियों पर ओशो चर्चा करते हुए बताते हैं कि कैसे इनके द्वारा उन्हें आराम देकर फिर से तरोताज़ा किया जा सकता है। सहारा टाइम्स में इन विधियों को विस्तार से पढ़ा जा सकता है। मा देव प्रेमल के प्रेमियों के लिए 24 सितंबर के फाइनेंशियल एक्सप्रेस में एक विशेष लेख प्रकाशित हुआ है। मा प्रेमल के जीवन और संगीत से जुड़े उनके कई पहलुओं को इस लेख में प्रकाशित किया गया है। उन्होंने बताया कि 2007 में उनका एक नया एलबम जारी किया जायेगा। अपने सहयोगी मीतेन का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मैं और मीतेन गायत्री मंत्र गाना हमेशा पसंद करते हैं। यह हमें नई ऊर्जा, नया आनंद देता है।

The rhythm divine

German chanteuse Deva Premal and her songwriter-partner Miten find peace by singing the *Gayatri Mantra* to the world

अखबारों में छपी कुछ खबरों की तरफ रुख करें तो 22 से 26 सितंबर को क्लब हाउस, मनाली में ओशो संन्यास महोत्सव का आयोजन हुआ। इस पांच दिवसीय शिविर का संचालन स्वामी वैराग्य अमृत द्वारा किया गया। प्रतिदिन शिविर का आरंभ सक्रिय ध्यान से होता। दिन चढ़ने के साथ-साथ नादब्रह्म, विपस्सना, नृत्य ध्यान, और सायं कुण्डलिनी और संध्या सत्संग आदि ध्यान करवाये जाते। इस दौरान विशेष तौर पर मनालसु नदी के तट पर ध्यान करवाया, जिसमें नदी की भांति बहना सिखाया गया और ओशो द्वारा बताई गई विज्ञान भैरव तंत्र की ध्यान विधियां करवाई गई। शिविर के अंतिम दिन 20 मित्रों ने नव-संन्यास की दीक्षा ली।

In memoriam

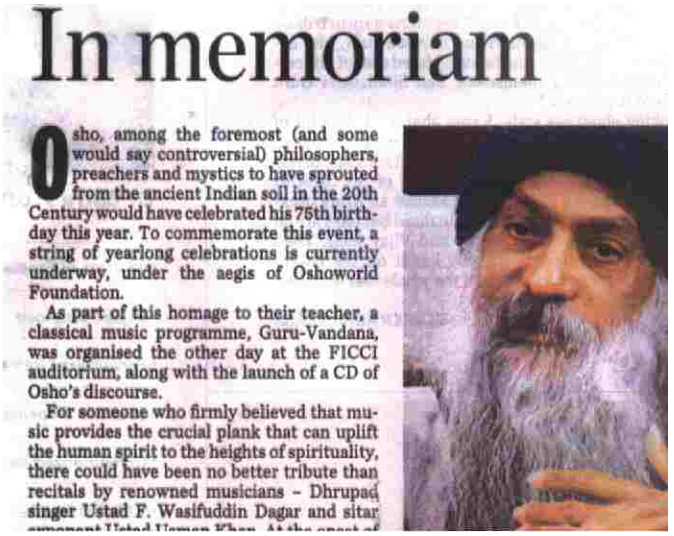

Osho, among the foremost (and some would say controversial) philosophers, preachers and mystics to have sprouted from the ancient Indian soil in the 20th Century would have celebrated his 75th birthday this year. To commemorate this event, a string of yearlong celebrations is currently underway, under the aegis of Oshoworld Foundation.

As part of this homage to their teacher, a classical music programme, Guru-Vandana, was organised the other day at the FICCI auditorium, along with the launch of a CD of Osho's discourse.

For someone who firmly believed that music provides the crucial plank that can uplift the human spirit to the heights of spirituality, there could have been no better tribute than recitals by renowned musicians – Dhrupad singer Ustad F. Wasifuddin Dagar and sitar

23 सितंबर की हिंदू अखबार में 'इन मेमोरियम' (स्मृति में) शीर्षक से ओशो के 75 वें जन्म-दिवस वर्षोत्सव के उपलक्ष में उस्ताद वसीफुद्दीन डागर तथा उस्ताद उसमान खान की संगीत प्रस्तुति पर ए.पी.एस.मल्होत्रा का सुंदर लेख प्रकाशित हुआ है। डागर जी के उद्गार हैं कि आज के वातावरण में ओशो की देशना, उनके विचार सर्वथा महत्वपूर्ण हो गए हैं।

आगामी 11 दिसंबर को ओशो का 75वां जन्मदिवस संपूर्ण विश्व में मनाया जाएगा। यह अवसर है ओशो के संबंध में मीडिया को और अधिक जाग्रत और सक्रिय करने का ताकि उनकी जीवंत देशनाओं से पूरा विश्व जीवंत एवं आंदोलित हो उठे।

– स्वामी प्रेम अभिनंदन

ओशोधाम, नई दिल्ली में

मिस्टिक रोज़ ग्रुप

(26 जनवरी से 16 फरवरी, 2007)

उद्घाटन : 25 जनवरी, सायं छः बजे

संचालन: **मा धर्म ज्योति**

(नोट : ध्यानोत्सव में सम्मिलित होने के लिए मरून तथा सफेद रंग के रोब अपने साथ लाएं अथवा आप उन्हें ओशोधाम में खरीद सकते हैं। 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का प्रवेश निषेध है।)

मिस्टिक रोज़ ग्रुप के संबंध में ओशो कहते हैं : जो लोग ध्यान में गहरे जाना चाहते हैं, उनके लिए मैंने यह नई ध्यान विधि निर्मित की है। मैं तुम्हें एक बहुत बुनियादी विधि दे रहा हूं जो ताजी है और पहले कभी उसका उपयोग नहीं हुआ। और निस्संदेह यह विश्वव्यापी होने वाली है क्योंकि इसके प्रभावों को कोई भी देख लेगा कि व्यक्ति अधिक युवा हो गया है, अधिक प्रेमपूर्ण हो गया है, अधिक प्रसादपूर्ण हो गया है; वह अधिक लोचपूर्ण और कम दुराग्रही हो गया है; वह अधिक आनंदित और उत्सवपूर्ण हो गया है। उल्लेखनीय : इस अवसर पर 21 दिवस मौन की व्यवस्था भी उपलब्ध रहेगी। इस कार्यक्रम में केवल वे ही मित्र आएं जो पूरे समय के लिए आ सकते हैं।

बुकिंग व अतिरिक्त जानकारी:

ओशो राजयोग ध्यान केंद्र, सी-5/44, सफदरजंग डेवलपमेंट एरिया, नई दिल्ली-110016, **फोन:** 011- 26862898, 26964533

ओशो वर्ल्ड गैलेरिया, बी जी-09, अंसल प्लाज़ा, खेलगांव मार्ग, नई दिल्ली-110049, **फोन:** 011-26261616, 26261617

OSHO
BOOK SHOP

17 Shriram Building, Jawahar Nagar,
Near Hans Raj College,
Malkaganj Chowk,
Delhi. Tel: 23854448